वर्ष 2023-24 में श्रीअन्न की विकसित नई किस्में

भारत, श्रीअन्न का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। खाद्य सुरक्षा और पोषण से भरपूर इन अनाजों के माध्यम से भविष्य की समस्याओं से पार पाया जा सकता है। निरंतर बढ़ रही आबादी का भरण-पोषण करने, स्वस्थ आहार की उपलब्धता, पर्यावरण की रक्षा और जलवायु संकट से निपटने जैसी परिस्थितियों में श्रीअन्न का मुख्य स्थान है।

कृषि में लगातार हो रहे अनुसंधानों के जरिए अनाजों की नई-नई किस्में विकसित की जा रही हैं, जिससे देश में विभिन्न क्षेत्रों के अनुकूल भरपूर उत्पादन हासिल किया जा सके। इनमें जैव-प्रबलित किस्में सूखा, जलाभाव, बाढ़, जलभराव, लवणता एवं कम तापमान आदि जैसे विभिन्न अजैविक दबावों का मुकाबला करने में सक्षम हैं। देश की विभिन्न कृषि परिस्थितियों में खेती के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा श्रीअन्न की कुल 24 उच्च उपजशील किस्मों/संकरों को जारी किया गया। इनमें बाजरा की 4, कुटकी की 6, रागी की 5, चीना अथवा प्रोसो मिलेट की 3, कोदो और कंगनी प्रत्येक की दो-दो, ब्राउन टॉप और सांवां प्रत्येक की एक-एक किस्म शामिल हैं। इन किस्मों का विवरण निम्न प्रकार से है:

किस्म	अंगीकरण का क्षेत्र	मुख्य विशेषताएं
बाजरा		
जीएचबी 538 (ईडीवी:डीएम) (मरुआ सोना)	गुजरात	यह दोहरे प्रयोजन एवं अगेती परिपक्वता स्थितियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 26 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा हरा चारा उपज 63 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह किस्म प्रध्वंस, इरगॉट, स्मट, भूरा रतुआ से प्रतिरोधी तथा नाशीकीटों से मध्यम प्रतिरोधी और मृदुरोमिल आसिता से उच्च प्रतिरोधी है। यह लवण एवं सूखे से अपेक्षाकृत सहिष्णु और तापमान में उतार-चढ़ाव से उच्च सहिष्णु है।
पीसीबी 166 (एफबीएल 4)	पंजाब	यह दोहरे प्रयोजन एवं पछेती परिपक्वता स्थितियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 41.0 क्विंटल प्रति हैक्टर, हरा चारा 722 क्विंटल प्रति हैक्टर और शुष्क पदार्थ उपज 126.5 क्विंटल प्रति हैक्टर, पछेती परिपक्वता (50 प्रतिशत तक पुष्पण 89 दिनों के बाद होता है)। इसमें उच्च कच्चा प्रोटीन तत्व (9.6 प्रतिशत) है। यह मृदुरोमिल आसिता से प्रतिरोधी और पत्ती प्रध्वंस रोग से मध्यम प्रतिरोधी है।
बाजरा हाइब्रिड सीओएच 10 (टीएनबीएच 1 619)	तमिलनाडु	यह सिंचित तथा बारानी स्थितियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 30.13 क्विंटल प्रति हैक्टर (सिंचित स्थिति में), 20.49 क्विंटल प्रति हैक्टर (बारानी स्थिति में) तथा परिपक्वता 85-90 दिनों की है। इसमें उच्च मात्रा में लौह तत्व (59 पीपीएम) और जिंक तत्व (37 पीपीएम) होते हैं। यह प्ररोह मक्खी से मध्यम प्रतिरोधी और मृदुरोमिल आसिता से प्रतिरोधी है।
वीपीएमएच 14	कर्नाटक का क्षेत्र-3	यह अगेती/पछेती बुआई स्थितियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 37.62 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 88-90 दिनों की है। इसमें उच्च लौह तत्व (70 पीपीएम) और जिंक तत्व (45 पीपीएम) है।
कुटकी		
कलिंगा सुआन 18 (सीएलएमवी 2)	ओडिशा, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक	यह *खरीफ* मौसम के दौरान अगेती बुआई एवं बारानी ऊपरी भूमियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 16-17 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 92 दिनों की है। यह पत्ती अंगमारी, भूरा धब्बा रोग से प्रतिरोधी एवं प्ररोह मक्खी से सहिष्णु है। इसमें न ही झड़न रोग पाया जाता है और न ही इसमें फटन रोग पाया जाता है।
जीवी 4 (अंबिका)	गुजरात	यह बारानी *खरीफ* मौसम में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 32-34 क्विंटल प्रति हैक्टर और परिपक्वता अवधि 120-125 दिनों की है। यह नाशीजीवों एवं रोगों से मध्यम प्रतिरोधी है। इसमें झड़न एवं फटन रोग नहीं पाया जाता है।
हेगारी सेम 1 (एचएस 1) (आईआईएमआर एलएम-8437-17)	कर्नाटक	यह *खरीफ* बुआई स्थितियों के दौरान खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 15-16 क्विंटल प्रति हैक्टर और परिपक्वता 90-95 दिनों की है। इसमें लौह तत्व (31 पीपीएम), जिंक (18 पीपीएम) और कच्चा रेशा (9 प्रतिशत) उच्च मात्रा में होता है। इसमें झड़न रोग नहीं पाया जाता है।
जीपीयूएल 6	कर्नाटक	यह *खरीफ* और ग्रीष्म मौसमों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 15-20 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 85-90 दिनों की है। यह पत्ती अंगमारी तथा भूरा धब्बा रोग से मध्यम प्रतिरोधी है।
डीएचएलएम 28-4 (प्रकृति) (एलएमवी 513)	मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात, झारखंड, आंध्र प्रदेश	यह *खरीफ* मौसम के दौरान बारानी स्थिति में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 17.1 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 93-96 दिनों की है। यह ग्रेन स्मट, भूरा धब्बा रोग और पत्ती अंगमारी से प्रतिरोधी तथा प्ररोह मक्खी से सहिष्णु है।
जेके 95 (जवाहर कुटकी 93) (डीएलएम 95)	मध्य प्रदेश	यह बारानी समय पर की गई बुआई के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 16.2 क्विंटल प्रति हैक्टर (बारानी स्थिति में) तथा 75.2 क्विंटल प्रति हैक्टर (सिंचित स्थिति में) है एवं परिपक्वता अवधि 152 दिनों की है। इसमें लौह तत्व (42.3 पीपीएम) और जिंक तत्व (40.7 पीपीएम) है। यह चपाती बनाने की गुणवत्ता अच्छी है। यह भूरा धब्बा रोग से प्रतिरोधी है।

रागी (मडुआ)		
वीएल मडुआ 400 (सीएफएमवी 5)	मध्य प्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, गुजरात और आंध प्रदेश	यह *खरीफ* मौसम के दौरान बारानी स्थिति में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 34.76 क्विंटल प्रति हैक्टर है। इसकी परिपक्वता अवधि 100-102 दिनों की है। इसमें प्रोटीन (8.5 प्रतिशत) और कैल्शियम (399.6 मि.ग्रा. प्रति 100 ग्राम) है।
सीएफएमवी 4 (एफएमवी 1166)	आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र एवं तमिलनाडु	यह पछेती बुआई स्थितियों के तहत *खरीफ* एवं *रबी* मौसमों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 39 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 110-115 दिनों की है। यह ग्रीवा प्रध्वंस, भूरा धब्बा रोग, बैंडेड आच्छद अंगमारी, खुरपका सड़न जैसे रोगों से मध्यम प्रतिरोधी तथा पत्ती प्रध्वंस प्रतिरोधी है।
गोष्ठानी (वीआर 1099)	आंध्र प्रदेश	यह *खरीफ* और *रबी* मौसमों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 35-38 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 110-115 दिनों की है। इसमें लौह तत्व (57.9 पीपीएम) और जिंक तत्व (36.2 पीपीएम) उच्च मात्रा में है। यह बाली (फिंगर) एवं ग्रीवा प्रध्वंस रोगों से प्रतिरोधी है।
एसआईआरआई (केएमआर 316)	कर्नाटक	यह *खरीफ* और पछेती *खरीफ* बारानी स्थितियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 30 से 35 क्विंटल प्रति हैक्टर (बारानी) एवं 45-50 क्विंटल प्रति हैक्टर (सिंचित) है तथा यह परिपक्वता 100-105 दिनों की है। यह पत्ती, ग्रीवा एवं बाली प्रध्वंस, खुरपका जैसे रोगों से प्रतिरोधी, एफिड, तनाबेधक, प्ररोह मक्खी, ग्रास हॉपर अथवा टिड्डा एवं *माइलोसेरस वीविल* जैसे नाशीजीवों से सहिष्णु तथा ईअर हेड कैटरपिलर (इल्ली) नाशीजीव से मध्यम सहिष्णु है।
श्रीरत्ना (ओयूएटी कलिंगा फिंगर मिलेट् I) (आईईबी 601)	ओडिशा	यह *खरीफ* और ग्रीष्म ऋतु में सिंचित स्थितियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 23.5 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 117 दिनों की है। इसमें प्रोटीन (12.9 प्रतिशत) उच्च मात्रा में है तथा यह चपाती बनाने की गुणवत्ता अच्छी है। यह भूरा धब्बा एवं खुरपका सड़न रोगों से प्रतिरोधी, प्रध्वंस रोग से मध्यम प्रतिरोधी, तनाबेधक से मध्यम सहिष्णु, एफिड एवं टिड्डा (ग्रास हॉपर) जैसे नाशीजीवों से मध्यम प्रतिरोधी है। इसमें झड़न रोग और फटन रोग नहीं पाया जाता है। यह 60 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर तक नाइट्रोजन उर्वरक से अनुक्रियाशील है।
कोदो मिलेट		
दाहोद कोदो 1 (सीकेएमवी 3)	आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश और तमिलनाडु	यह *खरीफ* एवं बारानी स्थितियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 30-30 क्विंटल प्रति हैक्टर एवं चारा उपज 77-90 क्विंटल प्रति हैक्टर है। यह हेड स्मट, बैंडेड ब्लाइट, पत्ती अंगमरी एवं भूरा धब्बा रोगों से मध्यम प्रतिरोधी तथा प्ररोह मक्खी से मध्यम सहिष्णु है। इसमें झड़न रोग नहीं पाया जाता है।
जेके 9-I (जवाहर कोदो 9-I) (डीपीएस 9-I)	मध्य प्रदेश	यह बारानी एवं समय पर की गई बुआई स्थितियों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 27.4 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 104 दिनों की (मध्यम समूह) है। यह प्ररोह मक्खी से मध्यम प्रतिरोधी, हैड स्मट से प्रतिरोधी तथा सूखा एवं फटन रोगों से सहिष्णु है।
बर्नयार्ड मिलेट		
एटीएल I (टीएनईएफ 317) (कुदिराइवेली)	तमिलनाडु	यह सूखा प्रवण क्षेत्रों में खेती करने के लिए उपयुक्त है और उपभोक्ता की पसंदगी के अनुसार इसका मूल्यवर्धन किया जा सकता है। इसकी दाना उपज 21.2 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 90-95 दिनों की है। यह ग्रेन स्मट, प्ररोह मक्खी, तनाबेधक से मध्यम प्रतिरोधी तथा सूखे से सहिष्णु है।
प्रोसो मिलेट		
हेगारी बारुगु 1 (एचबी 1)	कर्नाटक	यह *खरीफ* मौसम में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 12-14 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 65-70 दिनों की है। इसमें उच्च लौह तत्व (55 पीपीएम), जिंक तत्व (35 पीपीएम) और कच्चा रेशा (11 प्रतिशत) है।
जीआरयूपी 28	कर्नाटक	यह *खरीफ* (जून-जुलाई), बारानी एवं ग्रीष्म (जनवरी) दोनों मौसमों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 17-20 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 80-85 दिनों की है। यह पत्ती अंगमारी से मध्यम प्रतिरोधी और भूरा धब्बा रोग से प्रतिरोधी है।
एटीएल 2 (टीएनपीएम 238) (पानी वरागु)	तमिलनाडु	यह यांत्रिक फसल-कटाई के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 21.40 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 65-73 दिनों की है। इसमें उच्च मात्रा में प्रोटीन (12.9 प्रतिशत) होती है। यह पत्ती अंगमारी से मध्यम प्रतिरोधी तथा भूरा धब्बा रोग से प्रतिरोधी और प्ररोह मक्खी से मध्यम सहिष्णु है। इसमें झड़न रोग नहीं होता है। फसल एक ही समय पर पककर तैयार हो जाती है।
कंगनी		
महानंदी (एसआईए 3159)	आंध्र प्रदेश	यह *खरीफ* और सिंचित रबी एवं ग्रीष्म मौसम में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 31.8 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 80-85 दिनों की है। इसमें प्रोटीन (12.8 ग्राम प्रति 100 दाने) एवं कैल्शियम (440 पीपीएम) उच्च मात्रा में है। यह पत्ती प्रध्वंस एवं मृदुरोमिल आसिता से मध्यम प्रतिरोधी तथा प्ररोह मक्खी से सहिष्णु है।
जीपीयूएफ 3	कर्नाटक	यह *खरीफ* (जून-जुलाई) एवं ग्रीष्म (जनवरी) मौसमों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 15-20 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 85-90 दिनों की है। यह रतुआ एवं पत्ती अंगमारी रोगों से मध्यम प्रतिरोधी है।
ब्राउन टॉप मिलेट		
हेगारी ब्राउनटॉप-2 (एचबीआर-2)	कर्नाटक	यह खरीफ मौसम में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसकी दाना उपज 18-20 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा परिपक्वता 95-100 दिनों की है। इसमें लौह तत्व (70 पीपीएम), जिंक तत्व (42 पीपीएम) और कच्चा रेशा (13 प्रतिशत) उच्च मात्रा में है।

स्रोत : भाकृअनुप वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2023-24